International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Vol. 1 No.2
Nov – Dec 2013

स्वातंत्र्योत्तर काल में बेरोजगारी, गरीबी व इतर समस्याएँ

डॉ. श्रीकांत बी. संगम
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सी.एस.बी. कला, एस.एम.आर.पी. विज्ञान और
जी.एल.आर. वाणिज्य स्नातक महाविद्यालय, रामदुर्ग-591123
Email: sbshindi@gmail.com

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला राष्ट्र है, जनसंख्या जितनी तेजी से विकास कर रही है, व्यक्तियों का आर्थिक स्तर और रोजगार के अवसर उतनी ही तेज गति से गिरते जा रहे हैं, भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह संभव नहीं है कि वह इतनी बड़ी जनसंख्या को रोजगार दिलवा सके। रोजगार की तलाश में दिन-रात एक कर रहे व्यक्तियों की संख्या, साधनों और उपलब्ध अवसरों की संख्या से कहीं अधिक है, यही कारण है कि आज भी अधिकांश युवा बेरोजगारी में ही जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हैं।

बेरोजगारी वह दशा है जिसमें शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ एवं समर्थ व्यक्ति को, जो कार्य करने की इच्छा करता है परंतु प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य नहीं मिलता है। बेरोजगारी से अभिप्राय उस स्थिति से है, जिसमें किसी कार्य करने के लिए इच्छुत तथा योग्य व्यक्ति को वर्तमान मजदूरी की दर पर कार्य उपलब्ध नहीं होता।

भारत में बेरोजगारी का स्वरूप : सामान्यतः देश की सारी श्रमिक संख्या रोजगार में नहीं लगी होती है अर्थात् उसका कम या अधिक भाग बेरोजगार होता है। भारत के संदर्भ में यह बात विशेष रूप से लागू होती है। यहाँ काफी बड़ी संख्या में देश की श्रमिक बेरोजगार हैं अथवा अल्परोजगार की दशा में कुछ ऐसे श्रमिक भी हैं, जो वर्ष के कुछ महीनों में रोजगार में होते हैं और बाकी महीनों में बोरोजगार रहते हैं। इन सबको देखते हुए भारत में बेरोजगारी के स्वरूप को मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है –

संरचनात्मक बेरोजगारी : भारत में बेरोजगारी इसी स्वभाव की है। जब देश मे पूंजी के साधन सीमित होते हैं और काम चलाने वालों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है तो कुछ व्यक्ति बिना काम के ही रह जाते हैं क्योंकि उनके लिए पर्याप्त साधन नहीं होते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी विकासशील देशों में पाई जाती हैं, तथा यह दीर्घकालीन होती है।

खुली बेरोजगारी : जब व्यक्ति कार्य करने में योग्य है और वे कार्य करना चाहते हैं लेकिन उनको कार्य नहीं मिलता है तो ऐसी स्थिति को खुली बेरोजगारी कहते हैं।

मौसमी बेरोजगारी : इस प्रकार की बेरोजगारी वर्ष के कुछ समय में हो जाती है, भारत में यहाँ कृषि में पाई जाती है। जब खेतों में जुताई और बुआई का मौसम होता है जो कृषि में काम होता है, लेकिन बीच के समय में इतना काम नहीं होता है अतः इस प्रकार के समय में श्रमिकों को काम नहीं मिलता है, इस बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहते हैं।

शिक्षित बेरोजगारी : यह खुली बेरोजगारी का ही एक रूप है। इसमें शिक्षित व्यक्तियाँ बेरोजगार होते हैं। शिक्षित बेरोजगारी में कुछ व्यक्ति अल्प रोजगार के स्थित में होते हैं जिन्हें रोजगार मिला हुआ होता है लेकिन वह उनकी शिक्षा के अनुरूप नहीं होता है।

अल्प रोजगार : जब किसी व्यक्ति को अपने पूर्ण क्षमता के अनुसार कार्य नहीं मिलता है, या पूरा काम नहीं मिलता है तो इसे अल्प रोजगार कहते हैं। जैसे जब एक इंजीनिरिंग की डिग्री प्राप्त व्यक्ति लिपिक या श्रमिक के रूप में कार्य करता है तो उसको अल्प रोजगार कहते हैं। ऐसे व्यक्ति कार्य करता तो दिखाई देता है लेकिन उसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं होता।

भारत में बेरोजगारी के कारण :

1. बढ़ती जनसंख्या
2. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
3. हस्त कला एवंलघु उद्योग का अवनति
4. त्रुटी पूर्ण नियोजन
5. मंदी पूंजी निर्माण गति
6. यंत्रीकरण एवं अभिनवीकरण

- भारत में बेरोजगारी को दूर करने के उपाय :

1. जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण
2. शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन
3. कुटी एवं लघु उद्योगों का विकास
4. प्राकृतिक साधनों का सर्वेक्षण
5. पूर्ण क्षमता का उपयोग
6. जनशक्ति नियोजन
7. गांवों में बिजली घरों की स्थापना

- सरकार ने बेरोजगारी कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए हैं :

1. सामाण्य रोजगार
2. विशिष्ट रोजगार
3. नियोजन सेवाएं
4. कुटीर एवं लघु उद्योग की विकास
5. बेरोजगार भत्ता

- **भारत में निर्धनता :** भारत में निर्धनता एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक समस्या है और इसमें संरचनात्मक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। संरचनात्मक कारकों में व्यवस्था, लिंग संबंधी असमानता, संसाधनों का असमान वितरण जैसे कारकों की निर्णायक भूमिका रही है। वर्तमान में कोविड-19 के संक्रमण और उसके प्रभावस्वरूप लागू किए गए राजनीतिक कदम व्यपाक लाकडाउन ने अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया है तथा पहले से ही विद्यमाण गरीबी की समस्या को और भी विकृत कर दिया है।
- भिन्न-भिन्न विचारकों ने निर्धनता के भिन्न-भिन्न कारण बतलाये हैं :
- **माल्थस के अनुसार :** निर्धनता का कारण यह है कि खाद्य सामग्री समानांतर वृद्धि से बढ़ती है, जनसंख्या गुणोतर वृद्धि के अनुसार बढ़ती है।
- हेनरी जार्ज के अनुसार : दरिद्रता का मूल कारण भूमि पर व्यक्ति गत स्वामित्व और एकाधिकार है।
- मार्क्स के अनुसार : निर्धनता का कारण पूँजिपतियों का श्रमिकों की मजदूरी हड़प कर उनका शोषण करना है।
- उपरोक्त विद्वानों ने निर्धनता के किसी एक कारण पर अत्यधिक बल दिया गया है परंतु आजकल अधिकांश विचारक निर्धनता को एक से अधिक कारकों के कारण मानते हैं। पहले व्यक्ति के भाग्य या व्यक्ति के कर्म को ही उनकी निर्धनता के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता था। परंतु आज का आर्थिक संसार इतना जटिल है कि निर्धनता का कारण केवल व्यक्ति को ही नहीं माना जा सकता।
- लैण्डिस और लैण्डिस ने लिखा है ; संसार में जहाँ आर्थिक खतरे इतने अधिक हैं, व्यक्ति को सदैव निर्धनता के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता।
- अर्थशास्त्री की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ समूह के अनुसार भारत में वर्ष 2011-12 में गरीबी का अनुपात 29.5% था। जब कि तेंदुलकर समिति के अनुसार यह अनुपात 21.9% था।

वर्ष	ग्रामीण	शहरी	योग
1993-94	50.1	31	45.3
2004-05	41.8	25.7	37.2
2006-07	33	20.9	29.8

- **भारत में निर्धनता के कारण :**

1. कृषि में निजी उत्पादकता	2. तीव्र जनसंख्या वृद्धि
3. उत्पादक रोजगार का अभाव	4. संस्थागत साख तक पहुँच का अभाव
5. सामाजिक सेवाओं तक पहुँच का अभाव	6. गरीबी का दुष्चक्र
7. जातिगत असामनता	8. लैंगिक असमानता,
9. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली	10. अशिक्षा
11. सामाजिक कारण a) जाति प्रथा b) सामाजिक प्रथा	

- **भारत में निर्धनता उन्मूलन संबंधी उपाय :**

1. आवास की समुचित व्यवस्था	2. मद्य निषेध
3. परिवार नियोजन	4. न्यूनतम मजदूरी का निश्चय
5. न्यायपूर्ण वितरण	6. बेकारी उन्मूलन
7. सामाजिक बीमा	8. शिक्षा
9. बड़े उद्योगों का विकास	10. छोटे और कुटीर उद्योगों का विकास
11. शक्ति का विकास	12. कृषि की उन्नति

- **भारत में निर्धनता उन्मूलन के कार्यक्रम :**

1. महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना
2. राष्ट्रीय ग्रामीन आजीविका मिशन
3. स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना

- **भारत में असमानता :**

भारत काफी प्रभावशाली आर्थिक समृद्धि वाला एक गतिशील देश है। विकास कार्यों के परिणाम स्वरूप यहाँ आर्थिक संवृद्धि, प्रति व्यक्ति आय में सुधार, देश में निर्धनता के स्तर आदि में कमी आयी है। यह वास्तविकता है कि देश की जनसंख्या में निर्धनों के प्रतिशत में लगातार कमी आई है। लेकिन देश के विभिन्न प्रांतों में सामाजिक आर्थिक विकास के स्तर में बहुत अधिक विषमता पाई जाती है। रहन-सहन के स्तर में भारी अंतर का विस्तार जिसे प्रति व्यक्ति आय से मापा जाता है। विभीन्न राज्यों में, प्रति व्यक्ति आय में अंतर है जैसे बिहार में प्रति व्यक्ति 12,000 रूपये और गोवा में 100,000 रुपये प्रति व्यक्ति आय है। ये इतिहास और भूतकालीन संवृद्धि के अनुभव के परिणाम हैं। दूसरी अन्य संबंधित विषमताएँ शिक्षा, साक्षरता दर, स्वास्थ्य आधारित संरचना, जनसंर्ख्या वृद्धी, निवेश व्यय तथा प्रदेशों की बनावट में भी है। पिछले दशक में क्षेत्रीय विषमता दर्शाती है कि धनी और गरीब क्षेत्रों में काफी अंतर है, जिसमें गोवा सबसे अधिक धनी क्षेत्र है तथा बिहार सबसे गरीब क्षेत्र है। 2010-11 में चंडीगढ़ सबसे धनी था, किंतु बिहार सबसे गरीब क्षेत्र रहा। इस अवधि में वार्षिक औसत वृद्धि दर में भी काफी अंतर है, जो चंडीगढ़ में 8.39 प्रतिशत है तथा जम्मू और कश्मीर में मात्र 2.71 प्रतिशत। इसके अतिरिक्त इस दशक में ऊपर के चार सबसे धनी क्षेत्र अर्थात् गोवा, चंडीगढ़, दिल्ली तथा पांडुचेरी में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू राज्य उत्पाद में दूसरे क्षेत्रों से काफी तीव्र गति से वृद्धि हुई है।

A भारत में विषमता के कारण :

प्रतिव्यक्ति आय,	गरीबी,
औद्योगिक वृद्धि,	कृषि में वृद्धि,
साक्षरता,	परिवहन और संचार

B क्षेत्रीय विषमताओं के कारण :

i. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
ii. भगोलिक कारक
iii. प्राकृतिक संसाधनों के वितरण और उपयोग में भीन्नता
iv. देश के मुख्य वाणिज्यिक केन्द्रों से दूरी

v. आधारभूत संरचना की कमी
vi. सुशासन की कमी

भारत में असमानता दूर करने के उपाय :

1. सामाजिक सशक्तिकरण
2. आर्थिक सशक्तिकरण
3. सामाजिक न्याय
4. महिला सशक्तिकरण
5. राजनीतिक सशक्तिकरण

अर्थव्यवस्था में रोजगार विहीन संवृद्धि की स्थिति में असमानता का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, विशेषकर तब जिन रोजगारों का सृजन हो रहा है, वह भी मुख्य रूप से असंगठित क्षेत्र में हो रहा है, या संगठित क्षेत्र में अनौपचारिक रोजगार के रूप में हो रहा है। यह स्थिति विशेषकर परेशान करने वाली है क्योंकि यह आर्थिक संवृद्धि की एक लुभावनी तस्वीर सामने रखती है जबकि साथ ही जनसंख्या के बडे हिस्से की सामाजिक-आर्थिक प्रगति के अवसर अवरुद्ध हो रहे हैं। भारत एक निर्धन देश है वह भी सामाजिक सुरक्षा कवच से वंचित। इसके करोडों नागरिकों के लिए कुछ न कुछ रोजगार तो प्राप्त करना बहुत जरूरी है।

सहायक ग्रंथ :

1. भारत में रोजगार की स्थिति- एक राजनीतिक वृत्तांत- ऑक्सफैम इंडिया
2. भारत अर्थव्यवस्था के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ- मॉड्यूल-2
3. भारत में बेरोजगारी की समस्या- डॉ. सुजीतकुमार साफी
4. भारत में निर्धनता- स्नातक- द्वितीय, प्रथम प्रश्न पत्र
5. सामाजिक समस्याएँ- क्रानिकल, नईदिल्ली
6. सामाजिक विघटन- जी.के. अग्रवाल, साहित्य भवन, आगरा
7. सामाजिक समस्याएँ- राम अहुजा, रावत प्रकाशन, जयपुर